अण्णा भाऊ साठेजी के साहित्य में नायक–नायिका

डॉ. हिमालया सुनील सकट

हिंदी विभागाध्यक्ष,

शंकरराव भेलके महाविद्यालय, नसरापूर, ता. भोर, जि. पुणे

साहित्यरत्न की उपाधि के दावेदार आदरणीय अण्णाभाऊ साठे केवल महाराष्ट्र भर के लिए नहीं, बल्कि भारतभूमि के बाहर आंतरराष्ट्रीय स्तर पर, रशिया तक अपनी लेखनी के बलबूते पर पहुँचनेवाले एकमात्र साहित्यकार सिद्ध हुए है। साठेजी ने १९४२ से अपनी लेखनयात्रा की शुरूआत की। आरंभिक समय में उन्होने लावणी, किसानगीत, मजदूरगीत, छक्कड, गण, पोवाडा, लोकनाटय इ. प्रकार की काव्यरचना की। आगे चलकर अण्णाभाऊ ने कहानी तथा उपन्यासो पर अपनी लेखनी प्रखरता से चलाई। वैसे तो उनकी सबसे पहली रचना १९३० में 'पानिपतचा पोवाडा' है, जो साठेजी ने उम्र के १० वें बरस में ही लिख दी थी किंतु आज वह कहीं भी उपलब्ध नहीं है।

अण्णाभाऊ की संपूर्ण जीवन–यात्रा ही संघर्ष से भरी है। स्वभावत: वे महात्वाकांक्षी, हठी, संवेदनशील, हरफनमौला थे। नवगीत की रचना में वे माहीर थे। मैदानी खेलो में उन्हे विशेष रूचि थी। उनके कुल रचना–संसार पर दृष्टिपात करे तो पता चलता है। कि लेखनी के धनी साठेजी ने लगभग साहित्य की हर विधा पर लेखनी चलायी है। उनके कुल ४० उपन्यास और ३०० कहानियॉ है। उल्लेखनीय बात यह है कि दलित समाज पर आधारित कथालेखन होने के कारण कुछ समय तक उन्हे प्रकाशित करने के लिए जद्दोजहद करनी पडी। किंतु बाद में उनकी कहानियों का प्रकाशन रफ्तार पकडता गया। खास बात यह है कि उनकी कहानियों का अनुवाद हिंदी, सिंधी, बंगाली, मल्याळी, गुजराथी इन भारतीय भाषाओं में तो हुआ है साथ ही जर्मन, झेक, अंग्रेजी, पॉलिश, रशियन, स्लोव्हाक इ. विदेशी भाषाओं में भी अनुदीत है। साठेजी साहित्य ने जाति, समुदाय, धर्म देशकाल की सीमाओं के परे जाकर ख्याति प्राप्त की है। अपनी कहानियों के माध्यम से समाज के कुछ चरित्रो को सामाजिक प्रतिनिधि स्वरूप में स्थान प्राप्त हुआ है। उनके कुछ चरित्र दृष्टव्य है। मकुल, गुलाबी, भोमक्या, निळूमांग, आक्या, डोंगराचा राजा (सावळा मांग) लाडी, फरारी, आबी, भानामती, बबव्या, भाऊ, मारूत्या फुला, नसरू, दादान्हावी, बरबाद्या, कंजारी इन चरित्रो को कुछ इस तरह चित्रित किया है कि वे साहित्यिक जगत के अमर चरित्र सिद्ध हुए है। साठेजी की कहानीकला में विषय–वैविध्यता अनुभव समृद्धि, आशय सम्पन्नता, संघर्षशीलता दिखायी देती है। उनका कथन है कि, – ''कोण कुणाला धनी नाही.

सर्वाच्याच भोवती आक्रोश आहे. परंतु माझे स्पष्ट मत आहे की, तुम्ही जगलच पाहिजे. जस जमेल तसं जगा, काहीही करा आणि जगा. तुम्ही कुत्र्यासारखं मरू नका, हे ही दिवस जातील!''

अण्णाभाऊ प्रथमत: उत्तम शाहिरी करते थे, साथ ही लोकनाटय, लावणीलेखन, वगलेखन, गण, गवळण के साथ—साथ कुछ नाटक और यात्रावर्णन भी लिखते थे। उनकी ख्याति देखते हुए शाहीर अमर शेख, शाहीर द.न. गवाणकर इन समविचारी कलाकारों ने 'लालबावटा कलापथक' की स्थापना की। वहीं से इन दोस्तो के अनुग्रह से शाहीरी के बाद साठेजी ने कहानी उपन्यास लेखन कर साहित्य रत्न कहलाए। इन लेखन के पीछे स्थूलरूप मार्क्सवादी विचार उनका प्रेरणास्थान रहे। मूलत: मार्क्सवाद का मकसद ही मानव—मुक्ति की लडाई हैं। इसी मानव—मुक्ति का उद्देश अण्णाभाऊ की जीवनदृष्टि उनका समाज—विचार तथा उनका साहित्यिक दृष्टिकोण, समाज परिवर्तन की मूलभूत दृष्टि है। मार्क्सवाद कहता है। — मनुष्य प्रथमत: पशुगत अवस्था में था। श्रम तथा जरूरतो ने उसे पशु से अलग किया। मनुष्य ने खेती और पुशपालन आरंभ किया, औजारो की खोज हुई, धर्म, धर्मव्यवस्था, मंदिर, राजेशाही का अस्तित्व निर्माण हुआ, वहीं से अमीरी—गरीबी की दीवारें खींची गयी। प्रखर बुद्धिवाद, समता, स्वतंत्रता, विश्वबंधुत्व, समाजवादी विचार यह साठेजी के साहित्य की मौलिकता है। अन्याय, शोषण, छल, प्रताडना का उन्होने अपने साहित्य में विरोध किया है। भाऊ का आशावाद ही उनकी समाजप्रणाली का एकमात्र सूत्र रहा है। साठेजी के विचारों में म.ज्योतिबा फूले, राजर्षि शाहू, डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरजी के भी विचारों का प्रभाव है।

उपर्युक्त सभी गुण तथा विचार साठेजी के उपन्यासो में दिखायी देते है। उनकी प्रत्येक रचना के पीछे उनका स्वप्न बोल रहा है। वे कहते है ''मुझे मेरे देश और अपनी जनता पर उसके संघर्ष पर पूर्णत: विश्वास है। मैं रोज एक सपना देखता हूँ कि मेरा देश सूख—समृद्धि से भरा हो, जिसमें हर तरफ समानता है, खुशियों के सब्जबाग खिले। मेरा दावा है कि यह पृथ्वी किसी शेष नागपर नहीं बल्कि दलितों की हथेली पर विराजमान है। मैं इन्ही दलितो के उद्धार के लिए जिऊँगा भी और लिखूंगा भी। अण्णाभाऊजी ने क्रमश: चार प्रकार के उपन्यास लिखे है। पराक्रम गाथा, स्त्री—प्रश्न, प्रेम—शृंगार परक और ग्रामीण जीवन का व्यवहार दर्शन परक। साठेजी की पराक्रम गाथा के अंतर्गत 'फकिरा', 'वारणेच्या खोऱ्यात', 'वारणेचा वाघ', 'अग्निदिव्य', 'वैर' इ. उपन्यास लिखे गए। १९४२ में प्रकाशित 'वारणेच्या खोऱ्यात' उपन्यास हिंदुराव और मंगला की संघर्षशील दु:खात प्रेमकहानी हैं। १९३९ से १९४७ इस समय में सांगली, सातारा, कोल्हापूर जिलो में होनेवाले क्रांतिकरियों के जीवन संघर्ष का दर्शन चित्रित हैं। १९४२ का स्वतंत्रता संग्राम, दक्षिण महाराष्ट्र में होनेवाले घात—प्रतिघात, देशप्रेम का वर्णन हैं। इसी अनुक्रम से साठेजी का

'फकिरा' उपन्यास एक उत्कृष्ट कलाकृति है। फकीरा नामक चरित्र का जन्म अण्णाजी के जन्म के साथ ही हुआ है। अण्णाजी की माता के हाथ में फकीरा ने जो दो सुरती रूपए रखे थे, उसी की बालघुट्टी साठेजी ने पी रखी थी। उसी दो घूंट की जनमघुट्टी का परिणाम प्रस्तुत उपन्यास है। इस फकिरा ने महाराष्ट्र के कोने–कोने में, सह्याद्री की पहाडियों से सेठ–साहुकारो तथा ब्रिटीश सरकार को अपने घोडे के नाल के नीचे कुचल दिया है। इस 'फकिरा' को पढकर पहली बार दलितो की मुठ्ठी ने जोर पकडा था। वास्तव में यह उपन्यास दीन–दलितों की स्वतंत्रता की लडाई का साहित्यिक वेद पुराण है। आजतक मराठी साहित्य में म.फुले, महर्षि शिंदे, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, राजर्षि शाहू महाराज इ. ने दलितो के सामाजिक, सांस्कृतिक मुक्ति का पाठ लिखा है। लोकाहितवादी महर्षि कर्वे, आगरकर, सयाजीराव गायकवाड इ. ने दलितो की विद्रुप दशाओं पर लेखनी चलाई है, वह निर्विवाद है। साठेजी की एक और रचना 'अग्निदिव्य' एक शिवकालीन नायकप्रधान उपन्यास है। यह, स्वराज के सरसेनापती प्रतापराव गुर्जर के जीवनपर आधारित है। 'सालेरी का संग्राम', 'उंबराणी का संग्राम', 'चंद्रा प्रेम–प्रकरण', 'चंद्रा–प्रेम वर्णन', 'चंद्रा का अपहरण', उसका पुनरागमन, चंद्रा–खाशाबा का विवाह वर्णन इ. घटनाओं से उपन्यास की ऐतिहासिकता सिद्ध हुई है।

साठेजी ने स्त्रियों की व्यथापर केंद्रीत उपन्यासो की रचना की है। चित्रा उपन्यास में दूसरे महायुद्ध के दौरान मुंबई के अभिजात वर्ग में सुंदर ललनाओं का सौदा किस प्रकार किया जाता है। पेट की भूख तथा दरिद्रता से भरे ग्रामीण मजदूरों ने असहाय ललनाओं की रवानगी अपने ही घर से ही करने लगा। महाराष्ट्र की गरीब महिलाओं की मुंबई में बेआबरू होती हुई वासना के मोह में लाचारी और भूखमरी से ग्रस्त महिलाओं की अस्मिता उसकी पवित्रता, चरित्र और स्वप्न, अपेक्षा और कौमार्य के भंग होने की व्यथा साठेजी ने समर्थता से की है।

इसी सूची में साठेजी का अन्य उपन्यास 'वैजयंता' है, जो १९५९ में प्रकाशित हुआ है। महाराष्ट्र के लोकनाटय कलाकारों के जीवन की समस्याओं पर आधारित इसकी कथा है। 'तमाशा' यह महाराष्ट्र का राष्ट्रीय कलाप्रकार है। इन कलाकारों का विदारक जीवन साठेजी ने हृदयद्रावक शब्दो में चित्रण किया है। 'चंदन' नामक उपन्यास में भी साठेजी ने एक श्रमशील कामगार–स्त्री के जीवन–दर्शन का चित्रण किया है। मुंबई के नारायण नगर, चिरागनगर, घाटकोपर के पत्रोवाली चाल और झुग्गी झोपडियों में रहनेवाले क्रूर वासना के भरे लोगो के बीच अपनी अग्निपरिक्षा देनेवाली बदनसीब युवा विधवा का वर्णन है जो आशावादी, जिद्दी, अपने उसुलो पर डटी विधवा चंदन है। इसी प्रकार से साठेजी के स्त्रियों के प्रश्नोपर आधारित अन्य उपन्यास 'फुलपाखरू', 'चिखलातील कमळ', 'आवडी', 'टिळा लाविते मी रक्ताचा', 'रत्ना' है। 'फुलपाखरू' उपन्यास

रिमांड होम में रहनेवाले बच्चों के जीवन की दूर्दशा का चित्रण है। 'चिखलातील कमळ' उपन्यास में महाराष्ट्र और कर्नाटक प्रांतो में सुंदर लडकियों को 'मुरळी' बनाकर देवताओं की सेवा करने के लिए छोड देने की क्रुर प्रथा का उल्लेख है। पाली, जेजुरी, सौदंती जैसे गांवो में 'वाघ्या–मुरळी' की प्रथा है जो, शादियों में कार्यक्रम पेश करना, समाज के अन्य पुरूषो से संबंध रखना, जिस ईश्वर ने उन्हे इस दुनिया में इतना जलील किया, उसी को सर माथे पर उठाकर गांव–गांव भीक मांगते हुए शरीर विक्रय करते हुए रहने पर मजबूर जीवन जीनेवाली जानलेवा समाज–प्रथा पर प्रकाश डाला है। 'आवडी', 'टिळा लाविते मी रक्ताचा' इस उपन्यास में साठेजी अभिजात्य घराने की सुंदर युवती के जीवन स्वप्नो को उसी के परिवार के मुखिया द्वारा किसतरह कुचला जाता है, इसका हृदयस्पर्शी वर्णन है। 'रत्ना' उपन्यास भी एक सेना के जवान की पत्नी की व्यथा है, जो युद्ध को गालियां देते हुए अपने पति की यह देख रही होती है। विनायक द्वारा बलात्कार की शिकार होती है।

प्रेम–शृंगार विषयक कथा – प्रेम मानवी जीवन का संगीत है। साहित्य जीवन का आईना और उपन्यास मानव जीवन का प्रांगण है। विश्व की ऐसी कोई भाषा नहीं, जिसमें प्रेमकथा न लिखी हो। मराठी साहित्य में प्रेम–लेखन का रूपांतर लावणी प्रथा में हुआ। ब्रिटीश काल आया, प्रणय को विविध तरीके से शिल्पांकित किया गया। पाश्चात्य साहित्य उभरा। इसमें वैचारिक निबंध, आधुनिक कविता, कथा, नाटक, उपन्यास, एकांकी इ. साहित्यिक प्रकार १९ वीं सदी में मराठी भाषा में विकसित हुए। इसमे नाटक, कथा, कविता, उपन्यास इन चारो ही प्रमुख साहित्य प्रकारो में प्रीतिभावना विलासित हुई।

साठेजी की प्रेम–शृंगारिक कथाओं में – 'अलगुज', 'रानगंगा', 'संघर्ष', 'अहंकार', 'रूप', 'आघात', 'गुलाम', 'मयुरा' और 'मुर्ति' है। इस में वास्तवदर्शी, जीवनदर्शी और स्वच्छन्द शीलता है। साठेजी का 'अलगुज' उपन्यास १९६६ में प्रकाशित हुआ। खानदानी किसान परिवार की लडकी रंगी और उसके नौकर बापू खारवते की प्रेमकथा है। ग्रामीण वातावरण में लिखी अलगुज वाद्य के सूर की दिवानी रंगी और खून के अपराध में फंसकर भी बापू किस प्रकार से रंगी को पाने में सफल होता है, इसका आकर्षक चित्रण किया है। 'रानगंगा' उपन्यास चंदर और प्रभा के प्रेमधागो से बुनी प्रेमकथा, रानगंगा नदी के किनारे पनपी प्रेमकथा का संघर्ष और विरह के सात समंदर पार करती हुई संघर्षशील ग्रामीण प्रेम कथा है। 'संघर्ष' भी सुलभ और आनंद की दुर्भाग्यपूर्ण प्रेमकथा है। जो पिता के अहंकार के आगे झूककर सुलभ का विवाह बाळासाहेब से होने के बावजूद वह उससे तलाक लेकर नर्सिंग कोर्स कर सेना के जवानों की सेवा करते हुए आनंद की मुलाकात से संघर्ष समाप्त होकर उनकी प्रीत सफल हो जाती है। इस अतार्किकता को

लेखक ने पाठक पर छोड दिया है। अण्णाजी की विधायक वृत्ति का उदाहरण 'अहंकार' उपन्यास है। इसमें अहंकार के कारण प्रेम का जीवनपुष्प ही कुम्हला जाता है। अवंतिका और रामराव की प्रेमकथा है जो पहली ही मुलाकात में अहंकार के कारण प्रेमी का अपमान करती है। 'रूपा' का लेखन अण्णाभाऊ की लगभग आखरी समय मे लिखी हुई प्रेमकथा हैं इसमें लेखक ने ग्रामीण भागो में दो गुटो में छिडी लडाई के बीच खिली प्रेमकथा है। 'गुलाम' उपन्यास में मनोरंजक पार्श्वभूमि पर आधारित वासू मिनाक्षी और मधी की यह प्रेमकहानी है। कुल मिलाकार अण्णाजी की अन्य रचनाओं की अपेक्षा उनका प्रीतीविषयक दृष्टिकोण निराला है। उनकी प्रेमकहानियॉ राष्ट्रीय स्वतंत्रता के आगे प्रेम को गौण स्थान है। उनकी कथाओं की पार्श्वभूमि शौर्यभूमि पर उभरी है। 'मास्तर' की मालन मास्तर के जेल से छूटने की राह न देखकर दूसरा ब्याह करती है। पति के मित्र द्वारा बलात्कार की शिकार रत्ना पति के आने तक ससुराल के ताने सहते हुए बच्चे की देखभाल करनेवाली रत्ना चित्रीत की है। 'फुलपाखरू' में वेश्या व्यवसाय करनेवाली रोहिणी पर प्रेम कर उससे विवाह करनेवाला राजा एक आदर्श हैं तमाशा जगत का 'चंदूलाल' जैसे गुंडे से न घबराकर रूठे हुए प्रेमी को मन ही मन चाहनेवाली 'वैजयंता' है। किचड के कमल की तरह खिली हुई मुरळी बनाकर जीवन जीनेवाली 'सीता' को पत्नी स्वीकार करनेवाला 'बळी' है। फंसाई गयी 'चित्रा' को स्वीकार करनेवाला 'जया', 'चंदन' जैसे कामगार मजदूर—स्त्री को मदद करनेवाला डॉ.जयवंत! ऑखे तरेरते हुए चलनेवाला जगूबुआ खानदानी राधा को अपने जाल में फंसाता है। ईर्ष्या की आग में झूलसां धनाजी रामोशी का घर बसानेवाली 'आवडी'। प्रीत के विविध अंगो को व्यापकता से दर्शाने वाले लोग उपन्यास में पाए गए है।

अण्णाभाऊ साठेजी की संपूर्ण लेखन—यात्रा मनुष्य के मानसिक अंतर्मन की तिलमिलाकर की यात्रा है। साठेजी के आरंभिक लेखन की अपेक्षा उत्तरार्ध के लेखन में अधिक प्रगल्भता है। यही उनकी प्रतिभाशाली शैली है, यही उनकी पाठक प्रियता है। भारतीय समाज रचना के अव्यय, शोषण विषमता की आवाहन कर समता, मानवता, न्याय और आर्थिक समतोल का निर्माण करने की खातिर उनके चरित्रोद्वारा नि:स्पृह, आदर्शवादी, त्यागी, आत्मसमर्पक, दिव्य ऐसे समाज नायक को जनवादी भूमिका के माध्यम से क्रांतिदर्शी युवाओं द्वारा साठेजी ने समाज परिवर्तन का अमोघ शस्त्र उठाया है। स्त्री—पावित्र्य को उत्कटता से चित्रित करते हुए देश की स्वतंत्रता और स्त्री की पवित्रता और पुरूष का स्वाभिमान इन तीनो में से किसी भी प्रकार का समझौता उन्हे मंजूर नही। पुरूष का स्वाभिमान आहत होता है तो, उसके टूटने की संभावना होती है। स्त्री का चारित्र्य लूटा गया तो उसका जीवन ही खत्म—सा हो जाता है। किंतु वह फिर भी उठकर फिर उभरती है।

निष्कर्ष :

अण्णाभाऊ साठे ने मराठी साहित्य का केंद्रबिंदू मध्यमवर्ग से हटाकर हरिजन, गिरीजन, दलित, श्रमिको की बदहाल बस्ती की ओर केद्रीत कर अछूते विषय को केंद्र बनाया। यह मराठी साहित्य को साठेजी की देन है। सामाजिक जीवन निष्ठा, अनुभवनिष्ठा, वास्तविकता, साहित्य के इन मूल्यो का भाऊ को समझौता स्वीकार नहीं था। वे मराठी साहित्य के दलित लेखन के मील के पत्थर साबित हुए। 'तमाशा' प्रकार को लोकनाटय में तबदील करनेवाले उद्धारकर्ता साठेजी श्रेष्ठ कलाकार है। स्त्रियों को चरित्र संभालने की सामर्थ्य दी है। उसे अबला से क्रांतिकारी सबला बनाने का श्रेय अण्णाजी को जाता है। अण्णाभाऊ का जीवन—चिंतन, मनन, भोग, कृतीशीलता, गंभीर और जिम्मेदारियों से परिपूर्ण है। उनका संपूर्ण लेखन देश की स्वतंत्र्यता, स्त्री—चारित्र्य, पुरूष के स्वाभिमान के रक्षण के लिए रहा है। अण्णाभाऊ ने मराठी साहित्य को बलशाली पुरूष, उन पुरूषो की ओर देखने का नया दृष्टिकोण दिया है। लोककला, लोक संघर्ष, लोकसमूह से परिपूर्ण भाऊजी की भाषाशैली मराठी साहित्य की धरोहर है।

संदर्भ :

अण्णाभाऊ साठे समाज विचार आणि साहित्य विवेचन — बाबूराव गुरव

माझा भाऊ — अण्णाभाऊ — शंकर साठे